पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र' की कहानियों में स्त्री पक्ष

आनन्द कुमार मिश्रा,

शोधार्थी, हिन्दी तथा आधुनिक भारतीय भाषा विभाग,
लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ(उ.प्र.).

शोध सारांश

प्रत्येक समय का साहित्य, अपने समय के लेखकों द्वारा स्वयं के जीवन तथा तत्कालीन समाज में घटित घटनाओं का अनुभूति एवं विचार के माध्यम से प्रस्तुत दस्तावेज़ होता है। पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र' ने अपने समय में समाज को जैसा देखा, जैसा भोगा उसका वैसा ही वर्णन अपनी कहानियों के माध्यम से किया है। 'उग्र' का लेखन उनके जीवन संघर्ष तथा सामाजिक परिस्थितियों के घात–प्रतिघात की परिणति है। उनका सम्पूर्ण जीवन संघर्ष तथा चुनौतियों से भरा रहा है। उनकी कहानियों के वर्ण्य विषय गम्भीर सामाजिक यथार्थ को उद्घाटित करने वाले हैं। उन्होंने स्त्री जीवन के विविध पहलुओं पर प्रकाश डाला है तथा कथाओं के माध्यम से समाज द्वारा स्त्री शोषण के नग्न सत्य को उद्घाटित किया है।

मुख्य शब्द – *दस्तावेज, शोषण, दुष्परिणामए घात–प्रतिघातए आडम्बर, नग्न–यथार्थ*

पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र' अपनी विलक्षण प्रतिभा, पैनी एवं निर्भीक शैली के कारण सर्वख्यात हैं। उन्होंने समाज में व्याप्त आधारहीन प्रथाओं, नारी शोषण के विविध पहलुओं, छुआछूत आदि पर निर्भीकता से लेखनी चलाई तथा आलोचना व निंदा की परवाह किये बिना समाज के नग्न–यथार्थ को अपनी कथा–साहित्य के माध्यम से रेखांकित किया।

समस्या प्रधान कहानियों में 'उग्र' ने बाल–विवाह, विषम विवाह एवं वैधव्य की समस्याओं के माध्यम से नारी के साथ होने वाले अन्याय का निरूपण किया है।

'मों को चुनरी की साध' शीर्षक कहानी बाल–विवाह और विधवा समस्या पर केन्द्रित है। यह कहानी समाज की रुढ़िवादी, निर्दयी मानसिकता पर मार्मिक प्रहार करती है। आठ वर्षीय लड़की(तुलसा) के माध्यम से कहानीकार समाज की बीमार मानसिकता तथा मृत–प्राय कुप्रथा की ओर ध्यान आकृष्ट करता है। क्रूर, निर्दयी, सड़ी–गली परम्परा में बंधा समाज आठ वर्षीय 'तुलसा' से उसकी लाल चुनरी छीन लेता है और उसे विधवा का जीवन जीने पर मजबूर करता है किन्तु वह अबोध लड़की समाज की क्रूर मानसिकता से अनभिज्ञ अपनी चुनरी की चाह में तड़पती हुई, अंत में अपने प्राण त्याग देती है।

'आँखों में आंसू' कहानी के माध्यम से 'उग्र' ने अनमेल विवाह के दुष्परिणाम को दर्शाया है। इस कहानी में अधिक उम्र लड़की से अल्प वयस्क लड़के की शादी के उपरांत उत्पन्न होने वाली समस्या को रेखांकित करने का प्रयास किया गया है। सामाजिक जीवन के वैवाहिक पक्ष की विरूपता तथा अनमेल विवाह से उपजने वाली समस्या पर यह कहानी सशक्त प्रहार करती है।

'उग्र' की एक अन्य कहानी 'विधवा', बाल–विवाह के दुष्परिणाम तथा वैधव्य की समस्या को बड़े ही मार्मिक ढंग से प्रस्तुत करती

है। बचपन में विवाह तथा पति के घर जाने से पहले ही विधवा हो जाने पर 'रमा' कैसे अरसे तक जीवन की सारी कटुताओं को सहती रही और जब सहने की सीमा पार होने लगी तब वह घर से निकल वेश्या बन गई। उसे वेश्या बनाने का अपराधी कौन है? 'उग्र' जी ने पूरे सामाजिक ढाँचे पर इस कहानी के माध्यम से व्यंग्य किया है।

स्त्री अस्मिता को केन्द्र में रखकर 'उग्र' ने कई महत्त्वपूर्ण कहानियाँ लिखीं। इन्हीं में से एक कहानी है– 'करुण कहानी'। इस कहानी का नायक केशव सच्चरित्र और सहृदय युवक है। वह शैतानों द्वारा सतायी जाती हुई एक युवती की प्राण रक्षा करता है। उस युवती का नाम है 'लीला'। बाद में, केशव लीला के घर स्नेह वश आने–जाने लगता है, वासना वश नहीं। किन्तु, उसके पति गणेश को उन दोनों पर शक हो जाता है। अन्त में, एक दिन उत्तेजित होकर गणेश अपनी पत्नी लीला की हत्या कर देता है। समाज में नारी के निरीह अस्तित्व को विषय बनाकर लिखी गई, यह कहानी नारी जीवन की 'करुण कहानी' ही है।

समाज की विद्रूपताओं तथा उसकी सड़ी–गली मान्यताओं के कारण विवश होकर न जाने कितने युवक–युवती जीवन से असंतुष्ट हो आत्महत्या जैसे कदम उठा लेते हैं। 'हत्यारा समाज' कहानी की कथावस्तु एक युवक और एक युवती के प्रेम पर आधारित है। एक युवक है, जो दूसरी स्त्री से प्रेम करता है। एक युवती है, जो दूसरे पुरुष से प्रेम करती है। परन्तु समाज इन्हें आपस में विवाह करने को विवश कर देता है। विवाह के उपरांत स्त्री (युवती) तीव्र स्वर से अपने पति से कहती है, "मैं आपकी नहीं हूँ।" वह युवक (पति) व्यंग्य पूर्ण मुस्कुराहट के साथ कहता है– 'तो मैं तुम्हारा पति भी कहाँ हूँ। जान पड़ता है तुम को मेरी कथा मालूम है।' स्त्री– 'नहीं, मुझे आपकी कोई भी बात मालूम नहीं। मेरी स्वयं एक बड़ी कथा है। मैं जबरदस्ती आपकी स्त्री बनाई गई हूँ।' फिर दोनों एक–दूसरे को अपनी कहानी सुनाते हैं। दोनों दुःखी हैं, विवश हैं, और इसलिए मिलकर आत्महत्या कर लेते हैं और कहानी लेखक समाज व्यंग्य करते हुए कहता है, "समाज की जय हो! वह चिरंजीवी हो!"

'उग्र' की कहानियाँ युगीन सन्दर्भ को ग्रहण कर मानव जीवन के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डालती हैं। समाज के नग्न यथार्थ को उदघाटित करने के कारण ही 'उग्र' पर अश्लीलतावादी होने का आरोप लगता रहा है, किन्तु वे कभी विचलित नहीं हुए बल्कि नारी की अस्मिता की रक्षा और समाज में उसके अस्तित्व की बात निर्भीकता से करते रहे। अनैतिक जीवन के चित्रण वाली कहानियों के लेखन में उनका उद्देश्य दुराचरण के दुष्परिणामों को दर्शाते हुए। जीवन में सच्चरित्रता के महत्त्व का प्रतिपादन करना रहा है। 'चाँदनी' उग्र की सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण कहानियों में से एक है। यह जितना विख्यात है, उतना ही विवादास्पद है। तत्कालीन रूढ़िवादी समाज ने क्रूर नग्न यथार्थ और स्त्री–शोषण को नजरअंदाज कर दिया तथा इस कहानी पर आलोचकों ने घोर अश्लीलता का आरोप लगा दिया। जबकि 'चाँदनी' में कहीं भी अश्लीलता नहीं है बल्कि सामंतवाद के अंतिम अवशेष राजाओं की भोग–विलासिता और अत्याचार का यथार्थ वर्णन है। व्यंग्य और करुणा का अद्‌भुत संगम इस कहानी में है।

कहानी की शुरूआत भारतीय सामंत के दरबार में एक सुन्दर एवं प्रख्यात फ्रांसीसी नर्तकी के प्रवेश से होता है। राजा उसके यौवन पर मुग्ध है। इस नायिका का नाम मिस मिनी है। मिस मिनी के यौवन का रस समाप्त हो जाने पर राजा उसे हरम का प्रमुख बना देता है, जो राजा के केली–क्रीड़ा के लिए रनिवास में सुन्दर नर्तकियों को तैयार करती है।

कथा के मध्य में एक मोड़ आता है, जब लंका प्रवास के समय राजा एक मुस्लिम युवती (चाँदनी) को हर लाते हैं और उसके यौवन को अपनी हवस की आग में जला देना चाहते हैं किन्तु राजा की यह आशा पूरी नहीं हो पाती। अंततः चाँदनी राजा के हाथों ही मृत्यु का वरण कर लेती है। व्यंग्यात्मक चित्रण और करुण भाव को जगाने में इस कहानी का महत्त्वपूर्ण स्थान है।

'दिल्ली की बात' शीर्षक कहानी में दिल्ली के ऐतिहासिक साम्प्रदायिक दंगे के दिनों की कहानी के साथ ही समाज में विधवा की स्थिति को इस कहानी का वर्ण्य विषय बनाया गया है। लेखक ने हिन्दू समाज की उस विद्रुपता का चित्रण किया है, जिसके फलस्वरूप विधवाओं को अनेक यातनाएँ सहनी पड़ती हैं, यहाँ तक कि कई बार धर्म परिवर्तन के लिए भी बाध्य होना पड़ता है। हमारे समाज में विधवाओं को देखा तो हेय दृष्टि से जाता है लेकिन साथ ही सबकी दृष्टि उन पर वासनापूर्ण ही रहती है। 'जो समाज विधवाओं के लिए भयंकर राक्षस हैं, वहीं विधवाओं के देवरों के लिए कामदेव की तरह उदार है। छोटा भाई यदि बड़े भाई की विधवा को, केवल कहने के लिए, छिपे तौर से, अपनी अंकशायिनी बना ले तो समाज उसे सह लेता है, पचा लेता है।' 'उग्र' के कथा शैली के विकास का परिचय हमें इस कहानी से मिलता है।

उपर्युक्त कहानियों के माध्यम से 'उग्र' ने जहाँ स्त्री–शोषण के विविध पक्षों का उद्घाटन किया है, वहीं दूसरी ओर 'दितवारिया', 'मेरी माँ', 'उसकी माँ' आदि कहानियों के माध्यम से स्त्री के आदर्श रूप, स्वाभिमानी, ममतामयी स्वरुप और क्षत्राणी स्वभाव को चित्रित कर सशक्त, आत्मनिर्भर नारी के रूप की स्थापना भी की है। 'मेरी माँ' नामक कहानी में बाहर से महाकाली, भीतर से गौरी, प्रलंबबाहु एवं तेजोमयी क्षत्राणी के व्यक्तित्व का चित्र प्रस्तुत किया गया है। फौलादी रंग वाली बलिदानी रणवीर सिंह की पत्नी के रौद्र रूप को इस कहानी में दिखाया गया है, उसकी वीरता के विषय में कहानीकार कहता है–'जैसे निदान में माधव, सूत्र कहने में वाग्भट्ट, शरीर विजय में सुश्रुत और चिकित्साशास्त्र में चरक बेजोड़ हैं, वैसे ही मेरे मोहल्ले में मेरी माँ है।'

इसीप्रकार 'दितवारिया' के आत्माभिमान का प्रभावपूर्ण अंकन हुआ है। 'दितवारितया' पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र' की संस्मरणात्मक कहानी है, जिसमें भावुकता व करुणा का पुट विद्यमान है। कहानी की प्रमुख पात्र लोना घाट गाँव की बहरी, अस्सी वर्षीय बूढ़ी क्षत्राणी दितवारिया है जिसके नाम पर ही सम्भवतः इंदौर के एक बाजार का नाम भी दितवारिया पड़ा है। जहाँ ग्रामीण देहाती चीजों– गाजर, मूली, भाजी, शाक, लाख की चूड़ियाँ, छपे कपड़े और ग्रामीण कारीगरी के नमूने जैसे– लोहे और काठ का सामान, मिट्टी के बर्तन वगैरह की दुकानें लगती हैं।

बूढ़ी क्षत्राणी दितवारिया सिर पर मूँगा का बोझा रखे तीन कोस दूर बाजार की ओर जाती है ताकि वह उसे बेंचकर अपनी बीमार विधवा बेटी सीता के लिए घी तथा कुछ कपड़े ले सके जिसने तीन दिन से अन्न का एक दाना तक नहीं खाया है। वह बूढ़ी शाम तक बाजार में मूँग बिक जाने की आस में बैठी रहती है परन्तु कोई ग्राहक उसका मूँग नहीं खरीदता। अंत में वह निराश हो परमात्मा को याद करते हुए अपना बोझा सिर पर रख रोते–सिसकते सघन अंधकार में घर की ओर आगे बढ़ने लगती है तभी एक व्यक्ति जो कि बाजार में आनंद–विनोद के उद्देश्य से आया होता है, वह कहता है– 'माँ! लो, ये चार रुपए मेरे पास हैं। इनसे तुम्हारी सीता को कुछ शान्ति मिल सकेगी।' जिस पर वह बूढ़ी कहती है, 'मैं लोना घाट की मशहूर क्षत्राणी हूँ। भूखों मरने पर भी 'दान' नहीं ले सकती। भगवान ने जब मूँग का ग्राहक नहीं भेजा, तभी मैंने समझ लिया कि

विधना अनुकूल नहीं। तुम्हारी दया के लिए आशीर्वाद देती हूँ, बेटा चिरंजीवी हो!'

बूढ़ी क्षत्राणी की उक्त बात सुनकर वह व्यक्ति अवाक् सा रह जाता है, फिर उस बूढ़ी के स्वाभिमान का सम्मान करते हुए वह सारी मूँगें उससे तीन रुपए में खरीद लेता है। बूढ़ी दितवारिया उसे दुआएँ देती खुशी–खुशी चली जाती है और वह उस मूँगे के बोझ के भार का एहसास कर स्तब्ध–सा रह जाता है।

दया, करुणा व भावुकता से ओत–प्रोत यह कहानी मनुष्य को स्वावलंबी तथा स्वाभिमानी बनने के लिए प्रेरित भी करती है।

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है की 'उग्र' की कहानियों में स्त्री–पक्ष कई रूपों में हमारे सामने आता है। 'उग्र' ने एक तरफ स्त्री को समाज की दमित मान्यताओं की बलि चढ़ते हुए दिखया है, तो कहीं वेश्या बनने पर मजबूर होते हुए उसे कमजोर, कोमल, निरीह और दूसरों पर आश्रित प्राणी की तरह चित्रित किया है और वहीं दूसरी तरफ स्त्री के सशक्त, निर्भीक, स्वाभिमानी व स्वावलंबी चरित्र का चित्रण किया है। निःसंदेह 'उग्र' अपने समय के ऐसे कहानीकार थे, जिन्होंने समाज के खोखले नियमों की पोल खोली और स्त्री की वास्तविक दशा का तटस्थ अंकन किया। इसीलिए 'उग्र' की कहानियां जितनी अपने समय में प्रसांगिक थी, उतनी आज भी हैं। आधुनिकता के इस दौर में आज भी स्त्री–शोषण के विविध आयाम मौजूद हैं। स्त्री आज भी अपनी अस्मिता की लड़ाई लड़ रही है। स्त्री स्वातंत्र्य और देह मुक्ति आज भी विमर्श का विषय बना हुआ है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. 'उग्र', पाण्डेय बेचन शर्मा : श्रेष्ठ रचनाएँ (भाग–1), आत्माराम एंड संस, कश्मीरी गेट, दिल्ली, २०१३
2. 'उग्र', पाण्डेय बेचन शर्मा : श्रेष्ठ रचनाएँ (भाग–2), आत्माराम एंड संस, कश्मीरी गेट, दिल्ली, २०१३
3. व्यास, राजशेखर : उग्र संचयन, भारतीय ज्ञानपीठ, दिल्ली, २०१५
4. पाण्डेय, भवदेव : उग्र का परिशिष्ट, भारतीय ज्ञानपीठ, दिल्ली, २००८
5. चतुर्वेदी, पंकज : आत्मकथा की संस्कृति, वाणी प्रकाशन, दिल्ली, २००३
6. पाण्डेय, (डॉ.) रत्नाकर : 'उग्र' और उनका साहित्य, नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी, प्रथम संस्करण– १९७१
7. प्रसाद, कालिका : वृहत हिंदी कोश, ज्ञान मंडल लिमिटेड, वाराणसी, पुनर्मुद्रण, जून 2007
8. हिन्दुस्तानी (त्रैमासिक), हिन्दुस्तानी एकेडेमी, इलाहबाद, भाग–78, अंक–1 जनवरी–मार्च २०१७